What is Assessment, Role and Importance of Assessment

आंकलन – महत्व एवं भूमिका

समाज के विकास का पूरा चक्र मूल्यांकन/आंकलन पर ही निर्भर करता है। किसी बालक को किस प्रकार की शिक्षा दी जाय, इसका निश्चय उसकी व्यैक्तिक व सामाजिक पृष्ठभूमि जाने बिना नही लिया जा सकता हैं। मूल्यांकन के द्वारा ही शिक्षा जगत में बालक की प्रगति का ज्ञान होता हैं। मूल्यांकन/आंकलन अध्यापन अधिगम प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। यह पढ़ाने में शिक्षकों की व पढ़ने में विद्यार्थियों की मदद करता हैं। यह एक निरन्तर चलने वाली प्रकिया है। अध्यापन अधिगम प्रकिया में मूल्यांकन/आंकलन किसी न किसी रूप में अवश्यमभावी हैं, क्योंकि सभी कार्य में शैक्षिक निर्णय लेने आवश्यक होते हैं। अतः यह वांछित हैं कि अध्यापक मूल्यांकन के सभी पहलूओं व इसके कक्षा में प्रयोग के विषय में जानकारी रखें।

वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था में परिणाम की बजाय आंकलन की प्रक्रिया पर अधिक जोर दिया जा रहा हैं। वस्तुतः वैश्विक शिक्षा व्यवस्था रचनावादी शिक्षण की ओर उन्मुख हुई हैं, क्योंकि शोध में रचनावादी शिक्षण विद्यार्थियों के सर्वागिण विकास में ज्यादा प्रभावी पाया गया हैं।शिक्षा तंत्र के इस परिवर्तन के कारण तदनुसार आंकलन की संपूर्ण प्रकिया में परिवर्तन आवश्यक हो गया हैं।भारत में राष्टीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) 2005 में विद्यार्थी के आंकलन एवं वर्तमान परीक्षा व्यवस्था में व्यापक बदलाव की आवश्यकता पर बल दिया गया है। छब्ब् 2005 के अनुसार ज्ञान को शाला के बाहर के जीवन, विद्धार्थी के समाज एवे संस्कृति से जोड़ना, तोता–रटंत ज्ञान प्रदान करने एवं पाठ्यचर्या के पाठ्यपुस्तक पर केन्द्रित रहने की बजाय विद्यार्थी के समग्र विकास की ओर उन्मुख परीक्षाओं को व्यापक एवं अधिक लचीला बनाना शामिल हैं।

आंकलन क्या हैं –

हम जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक किसी न किसी रूप में मूल्यांकन करते रहते है। मूल्यांकन/आंकलन एक निर्णयन प्रकिया हैं। मूलतः शब्द Assessment आंकलन की व्युत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द ' ad sedere - to

sit beside ' से माना जाता है। जिसका अर्थ है पास में बैठना। जो किसी सहायक के रूप में कार्य का अनुमान देता है बाद में इस शब्द का अर्थ बदलकर किसी व्यक्ति विचार आदि के बारे में निर्णय लेना हो गया। शब्दकोश के अनुरूप आंकलन किसी चीज की कीमत, वैल्यू, गुणवत्ता या महत्व का निर्णय अथवा निर्धारण करना हैं।

(The act of judging or deciding the amount, value, quality or importance of something)

वालंस, लार्सन एवं एल्क्सनीन 1992 के अनुसार– आंकलन का तात्पर्य किसी व्यक्ति या समूह के बारे में सूचना संग्रहण, विश्लेषण एवं उनका अर्थ निकालने की प्रकया से है, जिससे किसी व्यक्ति के बारे में अनुदेशनात्मक, निर्देश्नात्मक अथवा प्रशासनिक निर्णय लिए जा सकें।

Assessment is the process of collecting and organising information from purposeful activities (e.g., tests on performance or learning) with a view to drawing inferences about teaching and learning, as well as about persons, often making comparisons against established criteria. **(Lampriyanou & Athanasou, 2009)**

किसी विषय–वस्तु या व्यक्ति के गुणों की जानकारी या उपयोगिता का निर्णय मूल्यांकन/आंकलन द्वारा ही संभव है। यह व्यक्ति व समाज की प्रगति का आधार है। मूल्यांकन/आंकलन सदैव उद्देश्यों के अनुरूप किया जाता है। अतः NCERT के अनुसार मूल्यांकन/आंकलन द्वारा हमें 3 बातें पता चलती हैं–

1. हमने अपने उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त किए हैं ?
2. कक्षा मे दिए जाने वाले शैक्षिक निर्देश कितने प्रभावशाली है ?
3. शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति कितने अच्छें ढ़ंग से हुई हैं ?

इन तीनों तथ्यों से मिलकर मूल्यांकन/आंकलन पूरा होता है। इस प्रकार मूल्यांकन/आंकलन की क्रिया में उद्देश्य, अधिगम अनुभव व व्यवहार परिवर्तन एक दूसरे से संबंधित रहते हैं।

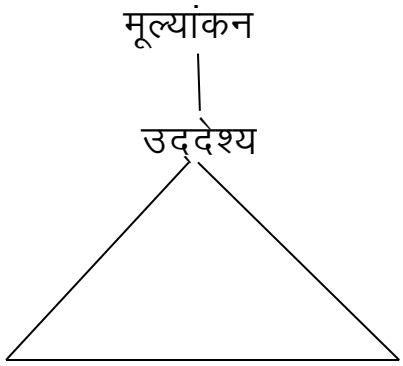

शिक्षण अधिगम प्रकिया में मूल्यांकन के योगदान का चित्रण

अतः आंकलन के निम्न 5 मुख्य पहलू हैं –

- उद्देश्यपूर्ण कार्य Purposeful activity
- सुचना संग्रहण Collection of Information
- सुचनाओं का विश्लेषण Analysis of Information
- सुचना का अर्थ निकालना Iterpretation of Information
- अनुदेशनात्मक, प्रशासनिक अथवा निर्देशनात्मक निर्णय Instruction, administration and guidance related decision making

आंकलन/मूल्यांकन की आवश्यकता एवं महत्व

आंकलन अध्यापन अधिगम प्रकिया का अपरिहार्य अंग हैं। किसी भी परिस्थिति साधारण या कठिन, कक्षा या इससे संबधित किसी भी क्रिया में जहां निर्णय लेना हैं, मूल्यांकन/आंकलन आवश्यक होता हैं। प्रधानाचार्य, शिक्षक या अभिभावक विद्यार्थियों के बारे में निर्णय लेना चाहे या सहायता करना चाहें तो मूल्यांकन/आंकलन आवश्यक हो जाता हैं। प्रभावशाली ढ़ंग से निर्णय लेने में मूल्यांकन/आंकलन की आवश्यकता पडती है। जैसे – विद्यार्थियों के समूह को श्रेणी या वर्गों में बांटना हो तो उनकी उपलब्धि का मूल्यांकन व उसका प्रभाव

मालूम करना होगा। मूल्यांकन/आंकलन शिक्षक को शिक्षण–अधिगम प्रकिया में सही दिशा में कदम बढ़ाने में सहायक होता है।

यह क्रियाएं निम्न हैं –

1. कक्षा के उददेश्यों को पूरा करना।
2. विद्यार्थियों की अधिगम कठिनाईयों का पता लगाना।
3. नवीन अधिगम अनुभवों की तैयारी निश्चित करना।
4. विशिष्ट क्रियाकलापों के लिए कक्षा में विद्यार्थियों के समूह बनाना।
5. विद्यार्थियों की समायोजन की प्रकिया व पूर्व अनुभव की जानकारी लेना।
6. विद्यार्थियों की समस्याओं के निराकरण में विद्यार्थियों की सहायता करना।
7. विद्यार्थियों की प्रगति की रिर्पोट तैयार करना।

इन सभी क्रियाओं में मूल्यांकन/आंकलन की आवश्यकता पड़ती हैं, यह मूल्यांकन जितना सही होगा शिक्षक प्रभावशाली ढ़ंग से सीखने में सहायक होंगे। विद्यार्थियों को उचित दिशा प्रदान करनें में आंकलन की महत्वपूर्ण भूमिका हैं। विद्यार्थी का पढ़ाई छोड़ना शैक्षिक कार्यों की असफलता का द्योतक है। विद्यार्थियों का शिक्षण–प्रशिक्षण प्रभावी रहा कि नही, उनमें उचित कौशल विकसित हुए कि नही यह प्रभावी आंकलन द्वारा ही संभव हैं। जो विद्यार्थियों को नौकरी व समाज में विशिष्ट स्थान प्रदान करती हैं।

एक अच्छा मूल्यांकन वैध, विश्वसनीय, व्यवहारिक, न्यायसंगत व उपयोगी होना चाहिए।

————————————————————